गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 205
दि. 26.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

सीमा पार से मौत की उड़ान: अफगानिस्तान में पाकिस्तानी हवाई हमले में नौ बच्चों सहित 10 नागरिकों की मौत

(जीएनएस)। अफगानिस्तान की शांत रात अचानक गोलों की गड़गड़ाहट से फट गई। खोस्त प्रांत के गेरबज्वो जिले के एक छोटे से मकान पर रविवार देर रात आसमान से बरसी उस आग ने केवल मिट्टी की दीवारें नहीं तोड़ीं, बल्कि एक पूरा परिवार उजाड़ दिया। अफगान सरकार ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया है कि यह हमला उसकी सीमा में घुसकर किया गया, जिसमें एक महिला और नौ मासूम बच्चों सहित कुल दस निर्दोष नागरिकों की जान चली गई। जिस घर से कुछ घंटे पहले बच्चों की हँसी गूंज रही थी, सुबह होते-होते वहाँ सिर्फ राख, मलबा और बेबस मातम रह गया।

तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने सोशल मीडिया पर एक दर्दभरी पोस्ट में लिखा कि जिस घर को निशाना बनाया गया, वह विलायत खान नामक एक साधारण नागरिक का था, जिसका परिवार रात को चैन की नींद सो रहा था। बमों ने न सिर्फ उनकी नींद छिनी बल्कि पूरा अस्तित्व मिटा दिया। मुजाहिद ने यह भी बताया कि कुनार और पक्तिका प्रांतों में भी इसी रात छापेमारी की गई, जहाँ चार नागरिक गंभीर रूप से घायल हुए। अंतरराष्ट्रीय मीडिया में साझा की गई तस्वीरों में मासूम बच्चों के निर्जीव शरीर देखकर दुनिया की आँखों में भी आंसू छलक आए, लेकिन पाकिस्तान की ओर से अब तक इस हमले पर कोई आधिकारिक

प्रतिक्रिया नहीं आई।

अफगानिस्तान और पाकिस्तान के रिश्तों में तनाव पुराना है, लेकिन इस घटना ने दोनों देशों के बीच अविश्वास की खाई को और गहरा कर दिया है। अक्टूबर में भी दोनों देशों की सीमा पर भीषण झड़प में लगभग सत्तर लोग मारे गए थे। उसके बाद दोहा में संघर्षविराम को लेकर समझौता हुआ, तुर्किए में शांति-वार्ता भी हुई, लेकिन नतीजा सिर्फ कागज़ों तक सीमित रह गया। जमीनी स्थिति जस की तस बनी हुई है। हाल का यह हमला उस आग में फिर से घी डालने जैसा है, जिसका धुआँ पहले से ही आसमान को ढक रहा था।

इधर पाकिस्तान के भीतर पेशावर के आत्मघाती हमले ने भी एक नया विवाद खड़ा कर दिया है। हमले की बरसी से ठीक पहले यह हवाई हमला ऐसे समय में हुआ है जब पाकिस्तान लगातार तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) पर आरोप लगा रहा है कि वह अफगानिस्तान की जमीन से पाकिस्तान के खिलाफ हमले करवा रहा है। सरकारी चैनलों का दावा है कि पेशावर हमले का हमलावर अफगान मूल का था, जबकि पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ जरदारी सीधे-सीधे टीटीपी को दोषी ठहरा चुके हैं। इस आरोप-प्रत आरोप की राजनीति के बीच दोनों देशों का आम आदमी बमों की मार झेल रहा है, जबकि कूटनीति के गलियारे खामोश हैं।

अफगानिस्तान के लिए यह हमला नया नहीं है। पिछले महीने की शुरुआत में भी पाकिस्तान ने काबुल के निकट और अन्य इलाकों में इसी तरह की बमबारी की थी। टीटीपी की गतिविधियों को रोकने के नाम पर होने वाली ये कार्रवाई अक्सर निर्दोष नागरिकों की जान ले लेती हैं, और हर बार एक नया जख्म छोड़ जाती हैं। सीमा के दोनों ओर रहने वाले अफगान और पाक नागरिक जानते हैं कि हथियारों की भाषा में कभी शांति नहीं बोई जाती, लेकिन उनके हिस्से में आवाज़ उठाने का अधिकार भी सीमित है।

इसी बीच पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियों ने अपने देश में चल रहे एक खुफिया अभियान में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के 22 विद्रोहियों को मार गिराने की जानकारी दी है। यह मुठभेड़ खैबर पख्तूनख्वा के बन्नू जिले में हुई, जहाँ सुरक्षा बलों ने लंबे समय से सक्रिय विद्रोही नेटवर्क पर बड़ी कार्रवाई की। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने इस अभियान की सफलता पर सुरक्षा बलों को बधाई दी है, जबकि पाकिस्तान का राजनीतिक तंत्र इस घटना को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूती के रूप में पेश कर रहा है।

पर सवाल फिर वही है—किसकी जीत? कौन-सा न्याय? और कब तक निर्दोष नागरिक, खासकर बच्चे, इन संघर्षों की कीमत अपनी जान देकर चुकाते रहेंगे? अफगानिस्तान के खोस्त में उस रात जो हुआ, उसने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि सीमा पर बहने वाला खून सिर्फ नक्शों की खींची हुई रेखाओं का नहीं, बल्कि उन परिवारों का होता है जो शांति और जीवन का सपना लेकर सोते हैं और सुबह होते-होते सिर्फ मलबे के नीचे दफन हो जाते हैं।

दिल्ली धमाका जांच में बड़ी प्रगति: आतंकी मुजम्मिल ने दिखाए सभी ठिकाने, एनआईए ने चार घंटे तक की मौके की तस्दीक

(जीएनएस)। दिल्ली धमाका केस की जांच में मंगलवार को बड़ा घटनाक्रम सामने आया, जब राष्ट्रीय जांच एजेंसी की टीम गिरफ्तार आतंकी डॉ. मुजम्मिल शकील को सुरक्षा घेराबंदी के बीच फरीदाबाद और पलवल के कई स्थानों पर लेकर पहुंची। एनआईए का यह दौरा केवल औपचारिक शिनाख्त भर नहीं था, बल्कि घटनाओं की वास्तविक पुनर्रचना, संदिग्ध गतिविधियों की जाँच, रासायनिक भंडारण की पुष्टि और आतंकी नेटवर्क की गहराई तक पहुँचने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ। टीम ने करीब चार घंटे तक मुजम्मिल से मौके पर ही पूछताछ की और उसके बताए गए सभी स्थानों की विस्तृत जाँच की। सबसे पहले एनआईए उसे अल-फलाह यूनिवर्सिटी लेकर पहुंची जहाँ से उसकी पढ़ाई और गतिविधियों की कड़ी जुड़ी हुई है। विश्वविद्यालय परिसर में उसके हॉस्टल, मेडिकल केबिन, अध्ययन करने के स्थान, संपर्क में आए व्यक्तियों और उसकी रोज़मर्रा की गतिविधियों की सूक्ष्म पड़ताल की गई। जांच अधिकारियों ने यह समझने की कोशिश की कि विश्वविद्यालय के भीतर या आसपास कहीं से उसे कोई ऐसी

सहायता, सामग्री, व्यक्ति या संपर्क तो नहीं मिला, जिसने आगे चलकर दिल्ली धमाके की साजिश को आकार दिया। टीम ने उसके ठहरने की आदतों, दोस्तों, नियमित आने-जाने के मार्ग और फोन गतिविधियों से जुड़े बिंदुओं पर अत्यंत बारीकी से सवाल किए। इसके बाद एनआईए उसे उस जगह पर ले गई, जहाँ से 360 किलो अमोनियम नाइट्रेट सूटकेस में भरा हुआ मिला था। यह वही रसायन है जिसका उपयोग अक्सर बड़े धमाकों में किया जाता है। यहां टीम ने मुजम्मिल से दुबारा उस पूरी प्रक्रिया की जानकारी ली कि यह रसायन किस तरह इकट्ठा किया गया, कहाँ और किस उद्देश्य से रखा गया और किस तरह इसे आगे उपयोग में लाया जाना था। सूटकेस में भरा यह विशाल रासायनिक माल किसी साधारण घटना का हिस्सा नहीं था, बल्कि एनआईए के अनुसार एक बड़े पैमाने पर धमाका करने की योजना का हिस्सा था। मुजम्मिल से इस स्थान पर रुक-रुककर कई बार प्रश्न पूछे गए, ताकि उसकी बयानबाजी में किसी तरह का विरोधाभास या छिपा हुआ तथ्य सामने आ सके। इसके बाद टीम उसे फतेहपुर तगा के उस घर में लेकर पहुँची, जहाँ 2,563 किलो अमोनियम नाइट्रेट बरामद किया गया था। इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक क्षमता वाला रसायन मिलना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि एक लंबे समय से व्यवस्थित और बड़े नेटवर्क के माध्यम से यह सामग्री इकट्ठा की जा रही थी। मौके की जाँच के दौरान मुजम्मिल ने स्वीकार किया कि वह दो बार कार में भरकर यह माल यहाँ पहुंचा चुका था और यह सब किसी 'बड़ी साजिश' के लिए किया जा रहा था। इस स्वीकारोक्ति ने जांच को नए आयाम दे दिए हैं, क्योंकि इससे साबित होता है कि दिल्ली धमाका केवल शुरुआत थी, आगे कहीं और वृहद स्तर पर तबाही की योजना मौजूद थी। एनआईए टीम ने उसे सोहना मंडी भी ले जाकर दो बीज भंडारों की पहचान कराई, जिनसे उसका संपर्क रहा था। इन भंडारों के माध्यम से वह किन लोगों से मिलता था, कौन उससे जुड़ा था, कौन सामग्री की ढुलाई या भंडारण में मदद कर रहा था—इन सभी बिंदुओं की पुष्टि टीम ने मौके पर जाकर की। बीज भंडारों का चयन और आतंकी गतिविधियों से उनका संबंध इस बात की ओर संकेत करता है कि आतंकी नेटवर्क सामान्य दिखने वाले व्यापारिक प्रतिष्ठानों का उपयोग पर्दे के पीछे अपने लॉजिस्टिक सेंटर के रूप में कर रहे थे। चार घंटे तक चली इस शिनाख्त, पूछताछ और सूक्ष्म निरीक्षण के बाद एनआईए टीम आतंकी मुजम्मिल को वापस दिल्ली लेकर रवाना हो गई। जांच एजेंसी अब उसके मोबाइल डेटा, संपर्क सूची, बैंक खाते, डिजिटल फुटप्रिंट और विश्वविद्यालय में उसके सामाजिक दायरे की गहराई से पड़ताल कर सकती है। यह भी संभावना जताई जा रही है कि अगले चरण में एनआईए उससे जुड़े और संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में ले या उनसे पूछताछ का दायरा बढ़ाए। दिल्ली धमाके की इस जांच में हर नई कड़ी एक बड़े आतंकी नेटवर्क की ओर इशारा कर रही है, जिसने सामान्य नागरिक ढाँचे का उपयोग कर भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री संगृहीत की और देश की सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती पैदा की। जांच एजेंसियों की सक्रियता और आरोपी की मौके पर शिनाख्त इस बात का संकेत है कि आने वाले दिनों में और बड़े खुलासे हो सकते हैं।

देश में मोबाइल रिकवरी का रिकॉर्ड टूटा: संचार साथी ऐप ने अक्टूबर में ढूंढे 50,000 खोए फोन, कुल बरामदगी पहुँची 7 लाख पार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देशभर में मोबाइल चोरी, गुमशुदगी और ब्लैक मार्केटिंग जैसी बढ़ती चुनौतियों के बीच दूरसंचार विभाग द्वारा विकसित 'संचार साथी' ऐप मोबाइल खोज और सुरक्षा का सबसे भरोसेमंद साधन बनकर उभर रहा है। अक्टूबर माह में इस प्लेटफॉर्म के जरिए 50 हजार से अधिक मोबाइल फोन बरामद किए गए, जो इस अभियान की शुरुआत के बाद किसी एक महीने में हासिल की गई अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। इसके साथ ही कुल रिकवरी का आंकड़ा सात लाख पार कर गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि मोबाइल ट्रैकिंग और साइबर मॉनिटरिंग के क्षेत्र में भारत ने तकनीकी रूप से एक मजबूत छलांग लगाई है।

रिकवरी के इस राष्ट्रीय अभियान में कर्नाटक और तेलंगाना सबसे आगे रहे हैं, जहां एक-एक लाख से अधिक मोबाइल ढूंढ निकाले गए। इन राज्यों में पुलिस, डिजिटल इंटेलिजेंस यूनिट और फील्ड टीमों के बीच बेहतर समन्वय और तकनीकी एकीकरण ने परिणामों को कई गुना बेहतर बनाया है। तीसरे स्थान पर महाराष्ट्र है, जहाँ अब तक 80 हजार से ज्यादा फोन वापस अपने मालिकों तक पहुँचाए जा चुके हैं। जून से अक्टूबर के बीच रिकवरी के मामलों में लगभग 47 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिसे विशेषज्ञ तकनीक पर बढ़ते भरोसे और तेज़ी से प्रतिक्रिया देने वाली टीमों का

नतीजा मानते हैं।

संचार साथी ऐप की सबसे बड़ी खासियत यह है कि जैसे ही किसी खोए हुए फोन में नई सिम डालने की कोशिश होती है, सिस्टम तुरंत संबंधित उपयोगकर्ता और नजदीकी पुलिस यूनिट को अलर्ट भेज देता है। इसके चलते चोरी हुए फोन का दुरुपयोग रुक रहा है और अपराधियों की पहचान में भी सहायता मिल रही है। कई मामलों में देखा गया है कि अलर्ट के कुछ ही घंटों के भीतर फोन बरामद कर लिया गया, जिससे पीड़ित नागरिकों को बड़ी राहत मिली है।

दूरसंचार विभाग के अधिकारियों का कहना है कि यह प्लेटफॉर्म पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से विकसित है और इसमें रियल-टाइम डिवाइस ट्रेसिंग, ऑटोमेटेड डेटा इंटीग्रेशन और जीरो-इंटरवेशन वर्कफ़्लो जैसी उन्नत सुविधाएँ मौजूद हैं। यह सिस्टम न सिर्फ देश की साइबर सुरक्षा को मजबूत करता है बल्कि नागरिकों में डिजिटल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का भरोसा भी बढ़ाता है। विभाग ने सभी नागरिकों से अपील की है कि मोबाइल खोने की स्थिति में तुरंत संचार साथी पर रिपोर्ट दर्ज करें, क्योंकि जितनी जल्दी सूचना मिलती है, रिकवरी की संभावना उतनी ही अधिक रहती है।

इस अभियान की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया है कि तकनीक और सरकारी तंत्र का सक्रिय समन्वय किसी भी बड़े स्तर की समस्या का समाधान बन सकता है। आने वाले समय में इस पहल को और तेज़ करने की योजना पर भी काम चल रहा है, ताकि हर नागरिक को अपना खोया हुआ मोबाइल जल्द से जल्द वापस मिल सके।

कर्नाटक में लोकायुक्त की बड़ी कार्रवाई: दस अफ़सरों के घर–दफ़्तरों पर तड़के छापा, भ्रष्टाचार और अवैध संपत्ति की जांच तेज

(जीएनएस)। कर्नाटक में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोकायुक्त पुलिस ने शुक्रवार तड़के एक समन्वित और उच्चस्तरीय अभियान चलाते हुए दस सरकारी अधिकारियों के घरों, दफ़्तरों और निजी परिसरों पर एक साथ छापेमारी की। सुबह-सुबह शुरू हुए इस ऑपरेशन ने प्रशासनिक हलकों में हलचल मचा दी है। लोकायुक्त के विशेष दस्तों ने अलग-अलग जिलों में पहुँचकर संपत्ति के कागज़ों, बैंक लेन-देन से जुड़े दस्तावेज़ों और संदिग्ध वित्तीय लेन-देन की गहन पड़ताल शुरू कर दी है। शुरुआती जानकारी के अनुसार कई जगहों से महत्वपूर्ण फाइलें, हार्डडिस्क, नोटिंग पैड और कुछ नगद राशि जब्त की गई है।

सूत्र बताते हैं कि लोकायुक्त को पिछले कुछ महीनों से लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि कई अधिकारी अपनी आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति इकट्ठा कर रहे हैं और कुछ विभागों में पद का दुरुपयोग कर वित्तीय लाभ उठाया जा रहा है। शिकायतों की प्राथमिक जांच में अनियमितताओं के संकेत मिलने के बाद लोकायुक्त ने यह संयुक्त कार्रवाई संचालित की।

जिन अधिकारियों के घरों और दफ्तरों पर छापे पड़े उनमें बेंगलुरु इलेक्ट्रॉनिक सिटी ट्रांसपोर्ट ऑफिस के अधीक्षक कुमारस्वामी, मांड्या नगर निगम के मुख्य लेखा अधिकारी पुट्टास्वामी, बीदर कृष्णा अपर परियोजना के मुख्य अभियंता प्रेम सिंह, मैसूर हूटागल्ली नगर निगम के राजस्व निरीक्षक रामास्वामी सी., धारवाड़ के कर्नाटक विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर सुभाष चंद्र, हुलिगोल प्राथमिक पशु चिकित्सा केंद्र के वरिष्ठ निरीक्षक सतीश, शिवमोग्गा सिम्स मेडिकल कॉलेज के एफडीए लक्ष्मीपति सी.एन., दावणगेरे एपीएमसी के सहायक निदेशक प्रभु जे., मैसूर पीडब्ल्यूडी के सहायक कार्यकारी अभियंता गिरीश डी.एम. और हावेरी परियोजना निदेशक कार्यालय के इंजीनियर शेकप्पा शामिल हैं।

लोकायुक्त अधिकारियों ने बताया कि छापेमारी केवल शुरुआती चरण है और यह अभियान देर रात तक जारी रह सकता है। सभी जब्त दस्तावेज़ों और अन्य सामग्रियों को आगे की फोरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा। अधिकारियों की संपत्ति, बैंक खातों और कथित अनियमित लेन-देन का मिलान उनकी वास्तविक आय और घोषित संपत्ति से किया जाएगा।

कर्नाटक में बीते कुछ वर्षों से कई विभागों में भ्रष्टाचार के आरोप लगातार बढ़ रहे हैं और सरकार पर कार्रवाई की मांग तेज होती जा रही थी। लोकायुक्त की यह ताज़ा छापेमारी उसी सख़्ती का संकेत मानी जा रही है। जानकारों का कहना है कि यह अभियान राज्य में बड़े स्तर पर एक और जांच की शुरुआत भर हो सकता है, जिसका दायरा आगे और बढ़ सकता है।

अपेक्षा है कि छापेमारी की विस्तृत रिपोर्ट आने के बाद कई अधिकारियों के खिलाफ आगे की कानूनी कार्रवाई भी तेज हो सकती है। फिलहाल लोकायुक्त की यह कार्रवाई राज्य के प्रशासनिक ढांचे पर बड़ा संदेश मानी जा रही है कि भ्रष्टाचार के मामलों में अब किसी को भी राहत मिलने वाली नहीं है।

हिरासत में मौतों पर सुप्रीम कोर्ट का कड़ा प्रहार: "सिस्टम पर कलंक, देश अब चुप नहीं बैठेगा"

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पुलिस हिरासत में लगातार हो रही मौतों और थानों में बढ़ती क्रूरता को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को बेहद सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि ऐसी घटनाएँ अब किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं की जाएंगी। अदालत ने टिप्पणी की कि हिरासत में होने वाली मौतें देश की न्याय व्यवस्था और प्रशासनिक ढांचे पर गहरी चोट हैं और यह वह दाग है जिसे अब राष्ट्र बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। अदालत की यह चेतावनी पूरे पुलिस तंत्र को आईना दिखाने वाली मानी जा रही है। सुनवाई के दौरान अदालत को अवगत कराया गया कि राजस्थान में पिछले आठ महीनों में ही 11 लोग पुलिस हिरासत में अपनी जान गंवा चुके हैं। यह जानकारी मिलते ही न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह स्थिति अस्वीकार्य है और इससे देश की व्यवस्था की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लगते हैं। पीठ ने इस बात पर भी नाराजगी जताई कि केंद्र सरकार ने अभी तक अपना अनुपालन हलफनामा दाखिल नहीं किया है। अदालत ने कड़े स्वर में पूछा कि केंद्र आखिर क्यों यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि वह सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों को गंभीरता से नहीं ले रहा। केंद्र ने तीन सप्ताह में रिपोर्ट जमा करने का आश्वासन दिया।

सुप्रीम कोर्ट 2018 और 2020 में ही आदेश जारी कर चुका है कि देश भर के सभी पुलिस थानों तथा सीबीआई, ईडी, एनआईए सहित तमाम केंद्रीय जांच एजेंसियों के दफ्तरों में पूर्ण कवरेज वाले सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएँ और रिकॉर्डिंग सिस्टम को बिना किसी अंतराल के सक्रिय रखा जाए। यह व्यवस्था पुलिस हिरासत में होने वाली हिंसा, अवैध गतिविधियों और मानवाधिकार उल्लंघनों को रोकने के उद्देश्य से की गई थी, लेकिन अदालत के संज्ञान में आया कि केवल 11 राज्यों ने ही अब तक सीसीटीवी सिस्टम पर अपनी रिपोर्ट जमा की है। कई राज्यों और केंद्र की कई एजेंसियों ने तो अभी तक बुनियादी जानकारी देना भी शुरू नहीं किया है। पीठ ने कहा कि यह सुस्ती न केवल अदालत के आदेशों की अवमानना है, बल्कि देश के नागरिकों की सुरक्षा से खिलवाड़ भी है।

इस बीच, सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार की सराहना की, जहाँ सभी थानों और चौकियों को जिला स्तरीय नियंत्रण केंद्र से लाइव जोड़ा गया है और निगरानी प्रणाली पूरी तरह सक्रिय है। अदालत ने इसे उत्कृष्ट और अनुकरणीय मॉडल बताते हुए कहा कि अन्य राज्य भी इस व्यवस्था से सीख लेकर अपने ढांचे को मजबूत कर सकते हैं।

सुनवाई में अमेरिका के मॉडल का उल्लेख भी सामने आया, जहाँ कई शहरों में पुलिस हिरासत और जेलों की लाइव स्ट्रीमिंग को पारदर्शिता बढ़ाने के लिए अपनाया गया है। सॉलिसिटर जनरल ने बताया कि भारत में भी कुछ समय पहले कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) फंड का उपयोग कर निजी जेलों की अवधारणा को लागू करने का सुझाव दिया गया था। इस पर अदालत ने कहा कि वह पहले से ही 'ओपन एयर प्रिजन' मॉडल पर दाखिल एक याचिका की समीक्षा कर रही है, जो भीड़भाड़, हिंसा और दुर्व्यवहार की घटनाओं को कम करने का एक कारगर तरीका हो सकता है।

संपादकीय

खतरनाक मंसूबे

नापाक पाक की ओर से सीमावर्ती राज्य पंजाब को अस्थिर करने की साजिश पिछली सदी से लगातार की जा रही है। लेकिन अब नशे का नश्तर सुनियोजित ढंग से इसके सीने पर जिस ढंग से चलाया जा रहा है, वह परेशान करने वाला है। पंजाब के पाक सीमा से लगे जिलों में नशीले पदार्थों की आपूर्ति लगातार जारी है। लेकिन अब इस साजिश में एक विचलित करने वाला अनैतिक मोड़ देखने को मिल रहा है। इसमें पाक स्थित ड्रग माफिया भारतीय सीमा में नाबालिगों को एक नशा आपूर्तिकर्ता के तौर पर भर्ती कर रहे हैं। यह कोई मामूली साजिश नहीं है, बल्कि एक खतरनाक प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जा रहा है। ये तकनीकी बदलावों, कानून की खामियों और सबसे बढ़कर बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाने का कुत्सित प्रयास ही है। दरअसल, सीमा पार बैठे नशा माफिया कानून के छिद्रों व परिस्थितियों का लाभ उठाने से नहीं चूकते। अमृतसर, तरनतारन, फिरोजपुर और फाजिल्का के किशोरों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। इन किशोरों में कई आर्थिक तंगी से जूझ रहे परिवारों से हैं। जिन्हें चंद रुपयों का प्रलोभन दिया जाता है। उन्हें स्मार्टफोनों का लालच भी दिया जाता है। इसके अलावा जो किशोर नशे की दलदल में धंस चुके हैं उनकी कमजोर नस को पकड़कर उन्हें मुफ्त ड्रग्स का लालच दिया जाता है। किसी भी देश के किशोरों का नशे के संजाल में फंसना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। बच्चे भविष्य के भारत के कर्णधार होते हैं। यदि वे अभी से नशे की दलदल और नशीले पदार्थों की आपूर्ति में लग जाएंगे तो देश-समाज का भविष्य कैसा होगा, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। जिस काम को किशोर लालच से अंजाम दे रहे हैं, सही मायनों में वह बेहद खतरनाक है। वे ड्रोन से गिराए गए हेरोइन के पैकेट व कुछ मामलों में खतरनाक अवैध हथियार उठाते हैं और उन्हें ड्रग माफिया द्वारा बताए गए एजेंटों तक पहुंचाते हैं।

दरअसल, आमतौर पर किशोरों की सामान्य सक्रियता को संदिग्ध नहीं माना जाता। उनका साफ-सुथरा रिकॉर्ड उन्हें कानून प्रवर्तन अधिकारियों की नजर से बचा लेता है। यदि नाबालिगों की गिरफ्तारी होती भी है तो वे भारतीय कानूनों के हिसाब से गंभीर सजा से बच जाते हैं। इस तरह, उनकी कम उम्र ही उन्हें सीमा पार बैठे नशे के तस्करों के लिये उपयोगी बना देती है। इन बच्चों के खिलाफ कार्रवाई करते समय प्रवर्तन एजेंसियों को उदार रवैया अपनाना चाहिए। दरअसल, कुछ बच्चे परिस्थितियों के मारे भी होते हैं। वे मूलतः अपराधी नहीं होते। कुछ शातिर अपराधी उनका इस्तेमाल करके इस अपराध की दलदल में धकेल देते हैं। सही मायनों में वे सीमा पार से रची गई साजिश और हमारी अपनी व्यवस्था की कमजोरियों के कुचक्र व उससे उपजी आपराधिक व्यवस्था में आसानी से फंस जाते हैं। असल में, भारतीय किशोर न्याय कानून का उद्देश्य नाबालिगों को सुधारना और सुरक्षा करना होता है। लेकिन इस कानून की मूल भावना का लाभ संगठित नेटवर्कों द्वारा अपने मंसूबों को अंजाम देने को उठाया जा रहा है। हम 21वीं सदी में नशे की तस्करी का मुकाबला बीसवीं सदी के उपायों से नहीं कर सकते हैं। कभी-कभार होने वाली गिरफ्तारियां, छिटपुट छापे और उदार चेतावनी अपर्याप्त कही जा सकती हैं। निश्चित रूप से अपराध की घातकता के अनुरूप ही प्रतिक्रिया देने की जरूरत है। सीमा की निगरानी व्यवस्था को अत्याधुनिक बनाये जाने की सख्त आवश्यकता है। स्कूलों, पंचायतों, सामुदायिक नेताओं और नागरिक समाज को पहले ही चेतावनी प्रणालियां बनानी चाहिए, ताकि पहचान हो सके कि बच्चों की परवरिश किस ढंग से की जा सके। इस दिशा में अभिभावकों को भी जागरूक करने की जरूरत है ताकि वे बच्चों के पथभ्रष्ट होने के खतरे के प्रति सचेत रहें। समुदायों को भी सतर्क रहने की जरूरत है। साथ ही जोखिम के दायरे में आ सकने वाले युवाओं को बेहतर शिक्षा, कार्य कौशल और वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि वे किसी प्रलोभन में आकर गलत राह न चुने। निश्चित तौर पर नाबालिगों का यह दुरुपयोग पंजाब के सामाजिक ताने-बाने व भारत की सुरक्षा पर हमला है।

अयोध्या जी, बहुत सुलभ हैं रामलला के दर्शन

रामलला के दर्शन के लिए यदि अयोध्या जी जा रहे हैं तो निश्चित होकर जाएं। ये मानकर जाए कि भगवान के घर जा रहे हैं। उनकी शरण में जा रहे हैं। बस फिर किसी चिंता की जरूरत नहीं। दर्शन के लिए किसी की सिफारिश मत कराइए। सीधे जाइए। दर्शन करिए और 20 से 30 मिनट में दर्शन कर मंदिर से बाहर आ जाइए। हमारा दावा है विश्व के किसी भी धर्म के तीर्थस्थल से इससे ज्यादा सुलभ दर्शन कहीं संभव नही हैं।

राम मंदिर आज हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ बन गया है। प्रतिदिन 80 हजार से एक लाख भक्त रामलला के दर्शन कर उन्हें प्रणाम करते हैं। कई अवसर पर तो ये संख्या डेढ़ लाख से ज्यादा हो जाती है। आज दुनिया भर में बसे लगभग हर सनातनी के मन में एक ही इच्छा है किसी तरह वह अयोध्या जाकर राम मंदिर के दर्शन कर सके। भगवान राम को शीश नवाए। हाल ही में हम पत्रकारों के एक सम्मेलन में अयोध्या जी में थे। रामलला के दर्शनों के लिए आ रही श्रद्धालुओं की भीड़ को देख मेरे एक साथी लखनऊ के वरिष्ठ पत्रकार दिनेश शर्मा ने कहा था कि अयोध्या जी आने वाले समय में हिंदुओं का प्रमुख श्रद्धा का केंद्र होगा। यहां प्रत्येक हिंदूसनातनी आकर शीश नवाना अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाएगा। शीश नवाकर अपने को कृतार्थ मानेगा।

अयोध्या में राम मंदिर बनने से पहले कभी श्रद्धालुओं को संकरी गलियों से गुजरने के बाद टेढ़े मेढ़े और उभर खाबड़ रास्तों से गुजरकर मंदिर तक पहुंचना होता था। आम श्रद्धालुओं के लिए ये यात्रा और कितनी दुरूह रहती होगी, यह समझते बनता है। इस सबके बावजूद यहां आने वाले श्रद्धालुओं का उत्साह और जोश देखते बनता था। अब मंदिर परिसर बन गया। भव्य मंदिर बन गया। 25 नंवबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर पर भव्य ध्वजारोहण करेंगे। भव्य समारोह होगा। इस आयोजन के प्रत्यक्षदर्शी बनने के लिए दुनिया भर से हजारों प्रमुख व्यक्ति आ रहे है। उम्मीद है कि ध्वजारोहण के दिन अयोध्या में वीवपीआईपी के एक सौ के आसपास जेट आएंगे।

अयोध्या आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु इस बात को लेकर आंशकित होता हैं, कि इतनी भीड़ में दर्शन कैसे होंगे? पूजा कैसे होगी? प्रसाद कैसे चढ़ेगा? सब चाहते हैं कि मंदिर आगमन की स्मृति फोटो के रूप में अपने पास सुरक्षित रखें। यहां स्थिति अन्य मंदिर से बिल्कुल भिन्न है। यहां न पूजा की व्यवस्था है, न प्रसाद चढ़ने का प्रबंध। यहां पूजन कराने वाले पुजारी भी नही है। यहां तो बस मंदिर आइए। रामलला के दर्शन करिए। प्रभु को शीश नवाइए और बाहर आ जाइए। यहां प्रसाद लेकर जाने की जरूरत नही है। मंदिर की ओर से प्रत्येक श्रद्धालु को प्रसाद मिलता है। मंदिर परिसर में मोबाइल वर्जित है। परेशानी उन्हें होती है जो सुरक्षा कर्मियों की नजर बचाकर मोबाइल मंदिर में लेकर जाना चाहते हैं। सुरक्षा जांच में मोबाइल पकड़ा जाता है। इन मोबाइल ले जाने वालों को लौटकर मंदिर के गेट पर आकर लॉकर में फोन रखकर फिर दर्शन को जाना पड़ता है। इस तरह इन्हें अन्य श्रद्धालुओं से एक डेढ़ किलोमीटर ज्यादा चलना होता है। मंदिर में अपना सामान करने के लिए लॉकर की व्यापक व्यवस्था है, किंतु इस काम में लगभग आधा घंटा लग जाता है। अच्छा यह है कि अपना पर्स, लैदर की बैल्ट, मोबाइल और कैमरा अपने कमरे पर छोड़ कर आए। अपनी आईडी और जरूरत के लिए रुपये अपनी जेब में रखलें। हमने ऐसा ही किया। इससे मंदिर के लॉकर में सामान जमा करने का हमारा आधे से एक घंटा बच गया। हम दर्शन कर 20 से 25 मिनट में मदिर से बाहर आ गए। व्हील चेयर लेने वालों और दिव्यांग के लिए तो और सुविधा है। उनका जाने का रास्ता अलग से है।

भारत के उत्तर-प्रदेश राज्य में स्थित अयोध्या, जो पारंपरिक रूप से एक अलग त्वरित तीर्थ-नगर थी, अब आधुनिकता और भक्ति के संगम का उदाहरण बनती जा रही है। खास कर राम जन्मभूमि (जिसके अंतर्गत राम मंदिर का निर्माण हुआ) के बाद इस नगर में बड़े पैमाने पर विकास कार्य चल रहे हैं। ये कार्य सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। यहां 1516 करोड़ के करीब यात्री अब प्रतिवर्ष आने लगे हैं। आने वाले समय में यह संख्या और बढ़ेगी ही। इस बढ़ती संख्या ने होटल, गेस्ट-हाउस, परिवहन-सेवाएँ, स्थानीय व्यापार व स्मृति-चिंतन (souvenir) उद्योग को गति दी है। अतः अयोध्या अब सिर्फ भक्ति-की जगह नहीं बल्कि एक सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था (हॉस्पिटैलिटी, रिटेल, परिवहन) का केन्द्र बनती जा रही है। इस प्रकार मंदिर-के पश्चात् अयोध्या की पहचान बदल रही है। अब अयोध्या "भक्ति नगर" से "भक्ति + विकास नगर" की ओर बढ़ रही है। विकास-यात्रा में पहुँचना और सहज अनुभव देना अहम है। इसलिए अयोध्या में कई बुनियादी संरचना-परियोजनाएँ लाई गई हैं।

एयर-कनेक्टिविटी के लिए महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा का निर्माण हुआ है। इसमें आने वाले चरणों में टर्मिनल विस्तार व रनवे विस्तार भी शामिल हैं। अयोध्या में रेलवे स्टेशन व आधुनिकीकृत सड़कें बनायी गई हैं। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन विश्व का श्रेष्ठतक रेलवे स्टेशन बनाने का प्रयास है। यहां यात्रियों के लिए तीन सौ के आसपास डार्मेट्री और कुछ रिटायरिंग रूम बनाये गए हैं। अन्य काम जारी है।

राम मंदिर के आसपास के तीर्थ स्थलों के लिए पैदल जाने के लिए मार्ग विकसित किया जा रहा है। इसे भक्ति पथ नाम दिया गया यह मार्ग, रामपथ से निकलता हुआ मंदिर के आसपास श्रद्धालुओं के चलने-वाले हिस्सों को सजाता है एवं पैदल यात्रियों के लिए खास व्यवस्था करता है। इसमें दुकानों-घरों को अलग रंग-रूप दिया गया है। भक्ति पथ वाले हिस्सों में 'सफ़ेद एवं भोरका' रंग के बजाय एक विशिष्ट सजावट का उपयोग हुआ है। भक्ति पथ मंदिर-मार्ग के उन हिस्सों को सूचीबद्ध करता है जहाँ पैदल-यात्रा अधिक होती है, अतः इस तरह से इसका उद्देश्य अभ्यागतों को आरामदायक एवं सुरक्षित चलने-वाले मार्ग देना है।

राम मंदिर तक पंहुच के मार्ग का नाम राम पथ दिया गया है। यह एक प्रकार से रिंग रोड जैसा है। इस मार्ग को भव्य रूप दिया जा रहा। यह मार्ग लगभग 13 किलोमीटर लंबा है और प्रमुख रूप से सहादतगंज से लेकर नया घाट (या नायाघाट) तक जाता है। इस मार्ग के दोनों किनारों पर दुकानों-घरों की एकरूप रूप से मरम्मत एवं पेंटिंग की गई है। सभी को एक समान रंग-रूप में सजाया गया है। सड़क को चौड़ा किया गया है और मुख्य रूप से 40 फीट या उससे अधिक चौड़ाई वाला बना कर बनाया गया है ताकि भीड़-भाड़ व आने-जाने में आराम हो सके। लाईटिंग-सिस्टम, फावड़े-प्लांटर्स, पेड़-पौधे, फुटपाथ, मिडियन में धार्मिक प्रतीक-स्तंभ जैसी सुविधाएं लगाई गई हैं। स्थानीय प्रशासन ने श्रद्धालुओं के लिए इस मार्ग पर गोल्फ कार्ट (इलेक्ट्रिक बग्गी) चलाई है। इसका प्रतियात्री किराया 20 रुपया रखा गया है। इस किराए के से आप इस मार्ग के किसी भी स्थान तक जा सकतें हैं। इन सरकारी गोल्फ कार्ट के कारण ईरिक्शा चालक भी मनमाने दाम नहीं वसूल कर पाते।

पुरानी परंपरा के हिस्से के रूप में 84 कोसी परिक्रमा मार्ग को श्रद्धा-परिक्रमा मार्ग नाम दिया गया है। इसे राष्ट्रीय राजमार्ग का दर्जा (एनएच-227B) मिला है। इससे अयोध्या और आसपास के तीर्थस्थलों का जुड़ाव बढ़ा है। इसको भी भव्य रूप दिया जा रहा है। इसके पुलों और फ्लाई ओवर के दोनों ओर भगवान राम के जीवन से संबधित झांकी बनाई जा रही है। नगर के बीच से एक पंचकोसी प्रतिक्रमा के विकास पर भी काम चल रहा है।

इन परिवहन सुधारों से न केवल तीर्थ-यात्रियों की सहजता बढ़ी है बल्कि स्थानीय व्यापार-संवाद व रोजगार-अवसरों में भी इजाफा हुआ है। आधुनिक विकास सिर्फ बड़ी इमारतें या सड़कें नहीं बल्कि बेहतर जीवन-मान और पर्यावरण-संगत विकास भी है। अयोध्या में इस दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। अयोध्या को 'मॉडल सोलर सिटी' घोषित किया गया है। 40 मेगावाट का सौर संयंत्र सरयू नदी के किनारे स्थापित किया गया है। इससे शहर की मांग की लगभग 25-30 प्रतिशत ऊर्जा पूरा हो रही है। यहां 550 एकड़ के "नव्या अयोध्या" टाउनशिप का विकास

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

राष्ट्रीय संविधान दिवस

संविधान दिवस

भारतीय संविधान की अंगीकरण के
७६वें वर्ष के अवसर पर
संविधान के निर्माता
डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर
और
संविधान सभा के सभी सदस्यों को
शत-शत नमन

"मेरे जीवन का हर पल डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा दिए गए भारत के संविधान के महान मूल्यों के प्रति समर्पित है। यह हमारा संविधान ही है, जिससे एक गरीब और पिछड़े परिवार में पैदा हुए मुझ जैसे व्यक्ति को भी राष्ट्र सेवा का अवसर मिला है। ये हमारा संविधान ही है, जिसकी वजह से आज करोड़ों देशवासियों को उम्मीद, सामर्थ्य और गरिमापूर्ण जीवन मिल रहा है।"
-श्री नरेन्द्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री

हर घर स्वदेशी,
घर-घर स्वदेशी

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

वर्ष २०१५ में माननीय प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी** ने
२६ नवम्बर को '**संविधान दिवस**' के रूप में मनाने का निर्णय किया

संविधान अंगीकरण के **७६वें वर्ष के अवसर पर** में पूरे
राज्य में वर्षभर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा

"हमारा संविधान हमारी
एकता का आधार है।"
-श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

हमारा संविधान,
हमारा स्वाभिमान

अडिग भक्ति की अग्नि

आचार्य विनोबा भावे एक शांत दोपहर में वर्धा जाने वाली ट्रेन में बैठे थे। पटरियों पर दौड़ती रेलगाड़ी की खनखनाहट, खुली खिड़की से आती हवा की ठंडक और अंदर बिखरी हल्की-सी शांति—सब कुछ मिलकर यात्रा को एक ध्यान जैसा बना रहे थे। उनका मन निर्लिप्त था, विचार शांत थे, और उनकी दृष्टि दूर कहीं क्षितिज की ओर टिकी हुई थी। पूरा माहौल ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति स्वयं उन्हें किसी अद्भुत अनुभव के लिए तैयार कर रही हो।

उसी बीच एक छोटे स्टेशन पर ट्रेन रुकी और यात्रियों की भीड़ आवाज़ों का झरना बनकर अंदर उमड़ आई। इस भीड़ के बीच एक दुबला-पतला, साधारण कपड़ों में लिपटा हुआ वृद्ध फ़कीर भी धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए डिब्बे में चढ़ा। उसकी चाल में कोई अकड़ नहीं थी, कोई जल्दी नहीं थी। वह बस सहज था—मानो उसे दुनिया की किसी भी चीज़ की इच्छा ही न हो। उसने एक कोने में जगह बनाई, अपना छोटा-सा झोला रखा और थोड़ी देर चुपचाप बैठा रहा।

कुछ क्षण बाद उसने दोनों आँखें बंद कीं, एक लंबी सांस ली और मधुर, शांत स्वर में भजन गाना शुरू किया। उसकी आवाज़ में न कोई दिखावा था, न कोई प्रयत्न। वह ऐसी आवाज़ थी जो भीतर से उठती है—जहाँ मन नहीं, केवल आत्मा बोलती है। शब्द भले साधारण थे, पर उनकी भक्ति इतनी सच्ची थी कि डिब्बे में बैठे हर व्यक्ति को कहीं न कहीं छू रही थी। बच्चों की शरारतें थम गईं, महिलाएँ मुस्कुराती हुई शांत बैठ गईं, और पुरुष बिना कुछ कहे गीत में डूबने लगे।

विनोबा भावे तो जैसे किसी दूसरी दुनिया में चले गए। भजन की धुन ने उनके भीतर एक पुराने युग की स्मृतियाँ जगाईं—कबीर का प्रेम, तुलसी की भक्ति, मीरा का समर्पण। उनकी आँखों में करुणा और आनंद का संगम तैरने लगा। उन्होंने फ़कीर को ध्यानपूर्वक देखा—वह बूढ़ा था, गरीब था, थका हुआ था पर उसकी आत्मा किसी राजा से कम नहीं लग रही थी।

डिब्बे में ही एक धनी जमींदार बैठा था—बड़ा पेट, भरी हुई जेबें, चमकदार घड़ी और धन का रौब उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था। वह फ़कीर के भजन को पहले मनोरंजन की तरह सुनता रहा, लेकिन धीरे-धीरे उसे समझ में आया कि यह मनोरंजन नहीं है—यह कुछ और है, जिसे वह समझ नहीं पा रहा। शायद उसे यह अप्रिय लगा कि एक फ़कीर की आवाज़ पूरे डिब्बे का ध्यान अपनी ओर खींच रही है।

उसने अपनी जेब से पाँच रुपये का नोट निकाला और फ़कीर की ओर बढ़ाते हुए कहा—

"ले लो यह पाँच रुपये। पर भजन छोड़कर कोई फिल्मी गाना गाओ। ज़्यादा लोगों को पसंद आएगा। भजन-वजन से क्या फ़ायदा?"

फ़कीर ने आँखें खोलीं। उसकी नज़र में कोई तिरस्कार नहीं था, कोई क्रोध नहीं था—सिर्फ वही सादगी, वही शांति। उसने अत्यंत विनम्रता से कहा— "साहिब, मैं केवल परमात्मा की स्तुति करता हूँ। यही मेरा नियम है। मेरी वाणी केवल उसका गीत गाती है।"

जमींदार हँसा—एक तेज़, अभिमानी हँसी, जैसे वह इस सिद्धांत को हद से ज़्यादा साधारण समझता हो। उसे लगा कि फ़कीर को बस पैसे चाहिए, और इनकार सिर्फ दिखावा है। उसने सौ रुपये का नोट निकाला और बोला—

"अरे बाबा, नियम-वियम छोड़ो। सौ रुपये ले लो और एक फिल्मी गीत गा दो। इसमें क्या जाता है? सौ रुपये कम नहीं होते।"

फ़कीर ने अपने शांत स्वर में कहा— "साहिब, सौ नहीं भले आप एक लाख रुपये दे दें, मेरे गीत नहीं बदलेंगे। भजन मेरी आत्मा की पुकार है। उसे मैं धन के लिए कभी नहीं बेचूँगा।"

डिब्बा अचानक बिल्कुल शांत हो गया। यात्रियों ने जमींदार की ओर देखा—उसका चेहरा लाल पड़ गया था। जैसे पहली बार किसी ने उसकी इच्छा को ठुकराया हो। पर फ़कीर की आवाज़ में ऐसी दृढ़ता थी कि कोई भी उसका विरोध नहीं कर सकता था। वह गरीब था, पर भीतर से असीम धनवान था। विनोबा भावे इस दृश्य को देखते-देखते भाव-विभोर हो उठे। उनके मन में एक गर्व की लहर दौड़ गई कि इस धरती पर अभी भी ऐसी आत्माएँ मौजूद हैं जो भक्ति को पैसे की तरह तौलती नहीं; जो प्रेम को वस्तु नहीं बनातीं; जो ईश्वर को बाज़ार की वस्तु नहीं समझतीं।

वह उठकर धीरे-धीरे फ़कीर के पास गए। किसी संत की तरह उनकी आँखें कृतज्ञता से चमक रही थीं। उन्होंने फ़कीर को गले लगाकर कहा— "आज समझ आया कि सूरदास, तुलसीदास और मीरा की परंपरा अब भी जीवित है। धन का लालच जिसे डिगा न सके, वही सच्चा भक्त है। तुमने आज भक्ति को फिर से अमर कर दिया।"

फ़कीर ने बस मुस्कुराकर सिर झुका दिया। उसके चेहरे पर वह चमक थी जो अक्सर तपस्वियों के चेहरे पर देखी जाती है—जहाँ आत्मा पूरी तरह रोशन हो चुकी होती है। वह फिर धीरे से अपना भजन गाने लगा—और डिब्बा एक मंदिर में बदल गया, जिसमें कोई घंटियाँ नहीं थीं, कोई धूप नहीं, कोई दीपक नहीं पर थी भक्ति की सर्वाधिक शुद्ध रोशनी।

ट्रेन आगे बढ़ती रही, पर उस क्षण को वहाँ बैठे किसी भी व्यक्ति ने कभी नहीं भुलाया। क्योंकि ऐसी घटनाएँ सिर्फ मन नहीं बदलतीं—जीवन बदल देती हैं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

"हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी"

आइए, एकता के लिए पैदल चलें, राष्ट्र उत्थान के लिए जगें

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित

सरदार@150

यूनिटी मार्च

एक भारत, आत्मनिर्भर भारत

राष्ट्रीय पदयात्रा प्रस्थान समारोह

26 नवंबर 2025, बुधवार

सुबह 09:00 बजे

शास्त्री मैदान, वल्लभ विद्यानगर, ज़िला आणंद

:: वर्चुअल उपस्थिति ::

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

:: मुख्य अतिथि ::

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

श्री माणिक साहा
माननीय मुख्यमंत्री, त्रिपुरा

:: विशेष उपस्थिति ::

डॉ. मनसुख मांडविया
माननीय केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

श्रीमती निमुबेन बांभणिया
माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, भारत सरकार

श्री जगदीश विश्वकर्मा
माननीय विधायक, निकोल

श्री जीतूभाई वाघाणी
माननीय मंत्री, गुजरात

:: पदयात्रा की मुख्य विशेषताएँ ::

182 किमी. लंबी यह पदयात्रा देश के हर जन को सरदार साहब के एकता के सुविचार को आत्मसात करने और अनुशासन व दृढ़ता से संपन्न उनके आदर्श-मूल्यों को जीवन व्यवहार में अपनाने के लिए प्रेरित करेगी

विशाल जनभागीदारी के साथ देशव्यापी राष्ट्रीय पदयात्रा का आरम्भ

यात्रा मार्ग में सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी, सरदार गाथा और ग्राम सभाओं का होगा आयोजन

युवा, महिला, विद्यार्थी, और समाज का हर वर्ग पदयात्रा से जुड़ेगा

"एकता, अखंडता और अडिगता के इस पावन पर्व को हम सब साथ मिलकर सफल बनाएँ। 'यूनिटी मार्च' पदयात्रा उत्साह, उमंग और देशभक्ति की ऊर्जा की त्रिवेणी बनेगी।"

श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

:: अधिक जानकारी के लिए ::

/SARDAR150YATRA SARDAR150.IN

अयोध्या में इतिहास का स्वर्ण क्षण: राम मंदिर पर धर्म ध्वजा फहरते ही भावुक हुए प्रधानमंत्री मोदी, पूरा परिसर 'राममय'

(जीएनएस)। अयोध्या। एक राष्ट्र की आत्मा जब अपने इतिहास से मिलती है तो दृश्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सभ्यताओं के पुनर्जन्म का बन जाता है। मंगलवार को अयोध्या में ऐसा ही क्षण उपस्थित हुआ, जब भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वज का आरोहण हुआ। हजारों वर्षों की सांस्कृतिक धारा, पाँच शताब्दियों का संघर्ष, अनेक पीढ़ियों का इंतज़ार और युगों-युगों से समाई आस्था इस एक क्षण में एकत्र हो गई।

सुबह से ही अयोध्या का वातावरण किसी आध्यात्मिक ऊर्जा केंद्र की भांति धड़क रहा था। सरयू के तट पर उगते सूर्य के साथ ही मंदिर परिसर की भव्यता दमक उठी थी। मंदिर के स्वर्णमंडित शिखरों पर पड़ती धूप सोने की लपटों जैसी चमक रही थी। दूर-दूर से आए श्रद्धालु धीमे-धीमे मंत्रों का जाप करते हुए आगे बढ़ रहे थे। हवा में चंदन, धूप और फूलों की सौंधी खुशबू का ऐसा सम्मिश्रण था जो किसी भी मन को दिव्यता में डुबो दे।

पवित्र क्षण से ठीक पहले— मौन छा गया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निर्धारित मुहूर्त में मंच पर पहुँचे। वहाँ उपस्थित हजारों लोगों ने अपनी साँसें रोक लीं। साधु-संतों की पंक्तियों में अगाध शांति फैल गई थी। फिर वह क्षण आया। प्रधानमंत्री ने ध्वजारोहण का बटन दबाया—और एक धीमी, दिव्य धुन की तरह केसरिया ध्वज ऊपर उठने लगा। उसकी रेशमी परतें हवा में नृत्य करती हुई ऊपर की ओर बढ़ रही थीं। हर इंच के साथ भीड़ की धड़कनें तेज हो रहीं थीं। पीएम मोदी लगातार ऊपर उठते ध्वज को अपलक निहार रहे थे। उनकी आँखें नम थीं—ऐसी नमकथरी जो पाँच सौ वर्षों के संघर्ष का भार समेटे थी। जैसे ही ध्वज अपने शिखर पर पहुँचा, अयोध्या का आकाश अचानक जयकारों से भर उठा— "जय श्री राम! जय श्री राम!" यह केवल उद्घोष नहीं, यह हजारों वर्षों के इतिहास की प्रतिध्वनि थी। ऐसा लगा मानो सरयू की लहरें भी तालमेल में नाच उठी हों।

धर्म ध्वज—भारत की सभ्यता का पुनर्जन्म

ध्वजारोहण पूर्ण होते ही प्रधानमंत्री मोदी ने कहा— "आज यह धर्म ध्वज केवल कपड़ा नहीं, यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है। सदियों का संकल्प आज सिद्ध हुआ है। यह ध्वज घोषणा है कि भारत अपनी जड़ों की ओर लौट आया है।" उन्होंने कहा— "आज विश्व राममय है। यह वह पूर्णाहुति है जिसका यज्ञ 500 वर्षों तक प्रज्ज्वलित रहा।" प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि राम भेद से नहीं, भाव से जोड़ते हैं। उनका संदेश सहयोग, सत्य, मर्यादा और कर्तव्य का है। "राम को वंश नहीं, मूल्य प्रिय हैं। हमें भी अपने भीतर इन मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी होगी," उन्होंने कहा।

अयोध्या की गलियाँ—हर कण में उत्सव

ध्वजारोहण के इस अद्भुत क्षण के साथ ही अयोध्या की गलियाँ जश्न में डूब गईं।

- महिलाएँ थालियों में दीप लिए मंत्रोच्चार कर रही थीं।
- बच्चे केसरिया झंडियाँ लहराते घूम रहे थे।
- दुकानों, मकानों और सरयू किनारे दीपों की पंक्तियाँ जगमगाने लगीं।

शहर भर में ढोल-नगाड़ों की धुन, शंखनाद और मंत्रोच्चार गूँज रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा नगर एक साथ आरती कर रहा हो।

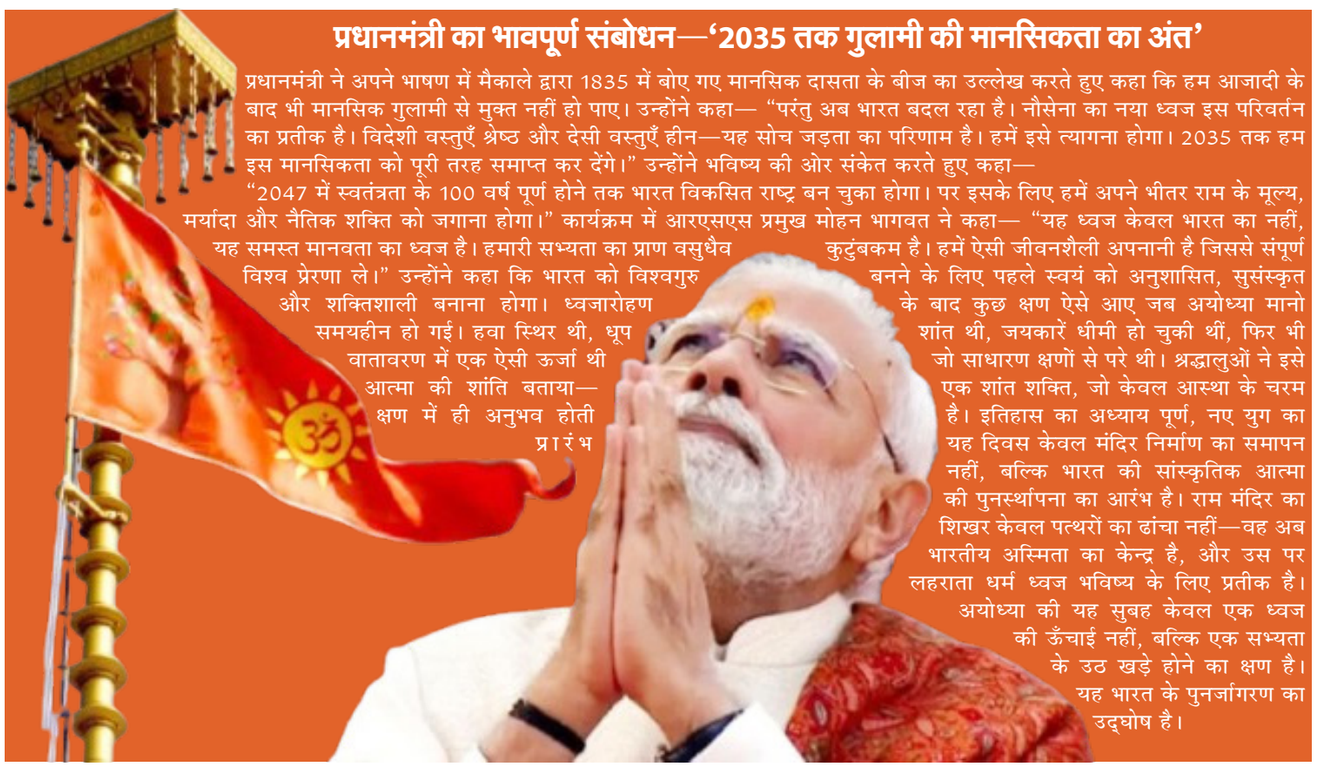

प्रधानमंत्री का भावपूर्ण संबोधन—'2035 तक गुलामी की मानसिकता का अंत'

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में मैकाले द्वारा 1835 में बोए गए मानसिक दासता के बीज का उल्लेख करते हुए कहा कि हम आजादी के बाद भी मानसिक गुलामी से मुक्त नहीं हो पाए। उन्होंने कहा— "परंतु अब भारत बदल रहा है। नौसेना का नया ध्वज इस परिवर्तन का प्रतीक है। विदेशी वस्तुएँ श्रेष्ठ और देसी वस्तुएँ हीन—यह सोच जड़ता का परिणाम है। हमें इसे त्यागना होगा। 2035 तक हम इस मानसिकता को पूरी तरह समाप्त कर देंगे।" उन्होंने भविष्य की ओर संकेत करते हुए कहा— "2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक भारत विकसित राष्ट्र बन चुका होगा। पर इसके लिए हमें अपने भीतर राम के मूल्य, मर्यादा और नैतिक शक्ति को जगाना होगा।" कार्यक्रम में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा— "यह ध्वज केवल भारत का नहीं, यह समस्त मानवता का ध्वज है। हमारी सभ्यता का प्राण वसुधैव कुटुंबकम है। हमें ऐसी जीवनशैली अपनानी है जिससे संपूर्ण विश्व प्रेरणा ले।" उन्होंने कहा कि भारत को विश्वगुरु बनने के लिए पहले स्वयं को अनुशासित, सुसंस्कृत और शक्तिशाली बनाना होगा। ध्वजारोहण के बाद कुछ क्षण ऐसे आए जब अयोध्या मानो समयहीन हो गई। हवा स्थिर थी, धूप शांत थी, जयकारें धीमी हो चुकी थीं, फिर भी वातावरण में एक ऐसी ऊर्जा थी जो साधारण क्षणों से परे थी। श्रद्धालुओं ने इसे आत्मा की शांति बताया— एक शांत शक्ति, जो केवल आस्था के चरम क्षण में ही अनुभव होती है। इतिहास का अध्याय पूर्ण, नए युग का प्रारंभ यह दिवस केवल मंदिर निर्माण का समापन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा की पुनर्स्थापना का आरंभ है। राम मंदिर का शिखर केवल पत्थरों का ढांचा नहीं—वह अब भारतीय अस्मिता का केन्द्र है, और उस पर लहराता धर्म ध्वज भविष्य के लिए प्रतीक है। अयोध्या की यह सुबह केवल एक ध्वज की ऊँचाई नहीं, बल्कि एक सभ्यता के उठ खड़े होने का क्षण है। यह भारत के पुनर्जागरण का उद्घोष है।

साधु-संतों की आँखों में छलका इतिहास

सामने बैठी साधु-संतों की पंक्ति में कई वृद्ध संत मौजूद थे—कुछ ऐसे जिन्होंने मंदिर आंदोलन में अपनी जवानी लगा दी थी। ध्वज ऊपर जाते ही उनमें से कई की आँखों से आँसू स्वतः ही बह निकले। एक वृद्ध संत ने पास बैठे साथी से धीमे स्वर में कहा— "अब जीवन सफल हो गया। आज हमारी तपस्या पूरी हुई।"

इथियोपिया ज्वालामुखी की राख भारत के ऊपर से गुज़रकर चीन की ओर बढ़ी; दिल्ली का AQI सुरक्षित, हवाई यातायात रहा प्रभावित

(जीएनएस)। नई दिल्ली। इथियोपिया के हायली गुब्बी ज्वालामुखी में हुए दुर्लभ विस्फोट का प्रभाव हजारों किलोमीटर दूर भारत तक दिखाई दिया, जहाँ सोमवार रात से ऊपरी वायुमंडल में फैला राख का भारी गुबार उत्तर-पश्चिमी भारत के ऊपर से होकर गुजरा। करीब 12 हजार वर्ष बाद सक्रिय हुए इस ज्वालामुखी की राख ने राजधानी दिल्ली, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा के ऊपरी आसमान में हल्की परत बना दी, जिस कारण हवाई यातायात व्यवस्था में अस्थायी बाधाएँ देखने को मिलीं और कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को रद्द या डायवर्ट करना पड़ा। वैज्ञानिकों ने इसे एक अत्यंत दुर्लभ घटना बताया है, जिसकी हवा की दिशा के साथ एक पल में महाद्वीप पार कर लेने की क्षमता ने विशेषज्ञों को भी आश्चर्यचकित किया। भारत मौसम विज्ञान

विभाग के महानिदेशक एम. महापात्रा ने स्पष्ट किया कि ज्वालामुखी विस्फोट से उठी राख जमीन तक नहीं पहुँची है और इसका असर केवल ऊपरी वायुमंडल में सीमित रहा। उन्होंने कहा कि यह राख क्षोभमंडल के ऊपरी हिस्से में बह रही है, इसलिए आम लोगों की सांस लेने योग्य हवा पर इसका कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आसमान में हल्की धुंध की परत अवश्य दिखाई दे सकती है, परंतु हवा की गुणवत्ता में गिरावट की आशंका नहीं है। महापात्रा ने यह भी संकेत दिया कि तेज़ वायुगति के कारण यह राख मंगलवार दोपहर तक पूरी तरह चीन की ओर बढ़ जाएगी और भारत के वायुमंडलीय क्षेत्र से बाहर निकल जाएगी। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार, दिल्ली की हवा पहले से ही स्थानीय प्रदूषण के कारण बदतर स्थिति में पहुँची हुई है। शहर के कई मॉनिटरिंग स्टेशनों पर AQI 400 से ऊपर और कुछ स्थानों पर 450 से पार दर्ज किया गया, जिसे 'गंभीर' से भी अधिक 'खतरनाक' स्तर माना जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान प्रदूषण का मूल कारण स्थानीय कारक—वाहनों का धुआँ, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण कार्य और पराली जलाने के प्रभाव—हैं, जिनसे वातावरण में PM2.5 और PM10 कणों की मात्रा लगातार बढ़ रही है। ऐसे में ज्वालामुखी राख को लेकर अतिरिक्त घबराहट की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह जमीन पर मौजूद हवा से सीधे तौर पर नहीं मिल रही।

वायु वैज्ञानिकों ने बताया कि ज्वालामुखी राख का सबसे अधिक असर हवाई मार्गों पर पड़ता है, क्योंकि सूक्ष्म कण जेट इंजनों को नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसी जोखिम के चलते एयर ट्रैफिक कंट्रोल ने कई मार्गों को तत्काल बदला और कुछ उड़ानों को एहतियातन रोका गया। हालांकि, जैसे-जैसे गुबार पूर्व की ओर बढ़ रहा है, विमानन क्षेत्र धीरे-धीरे सामान्य स्थिति में लौटने लगा है।

भारत के ऊपर से गुज़र रहा राख का यह गुबार वैश्विक वायुगति की शक्ति को दर्शाता है, जो कुछ ही घंटों में वातावरण की ऊपरी परतों में हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर सकता है। वैज्ञानिकों ने कहा कि आगामी 24 घंटों में यह प्रभाव पूरी तरह समाप्त हो जाएगा, लेकिन दिल्ली समेत उत्तरी भारत की हवा पर नज़र रखना जारी रखना होगा क्योंकि स्थानीय प्रदूषण अभी भी चरम पर है।

महिला कबड्डी विश्व कप में भारत की जीत

पश्चिम रेलवे की सोनाली शिंगटे द्वारा शानदार प्रदर्शन

(जीएनएस)। भारत ने 17 से 24 नवंबर 2025 तक ढाका, बांग्लादेश में आयोजित द्वितीय महिला कबड्डी विश्व कप में रोमांचक फाइनल में चीनी ताइपे को हराकर खिताब अपने नाम किया। यह असाधारण उपलब्धि न केवल पूरे देश के लिए, बल्कि पश्चिम रेलवे के लिए भी अत्यंत गर्व का क्षण है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह पश्चिम रेलवे के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि मुंबई सेंट्रल मंडल में डिप्टी चीफ टिकट इंस्पेक्टर (Dy CTI) के तौर पर काम करने वाली सुश्री सोनाली शिंगटे ने इंडियन टीम की राइट रेडर के तौर पर शानदार परफॉर्मेंस दी। पूरे टूर्नामेंट के दौरान उन्होंने अपनी रेड्स में ज़बरदस्त फुर्ती, कॉन्फिडेंस और सटीकता दिखाई, जिससे भारत की जीत में अहम योगदान मिला। पश्चिम रेलवे को सुश्री सोनाली शिंगटे के डेडिकेशन और अचीवमेंट पर बहुत गर्व है। उनका योगदान न केवल इंडियन महिला कबड्डी टीम के लिए प्रतिष्ठा की बात है, बल्कि पूरे पश्चिम रेलवे परिवार के लिए भी बहुत सम्मान की बात है। पश्चिम रेलवे भारतीय महिला कबड्डी टीम को दिल से बधाई देती है और सुश्री सोनाली शिंगटे को उनके इंस्पायरिंग परफॉर्मेंस के लिए सलाम करती है, जो रेलवे एथलीट्स के साथ-साथ देश भर के युवा खिलाड़ियों को भी प्रोत्साहित करता है।

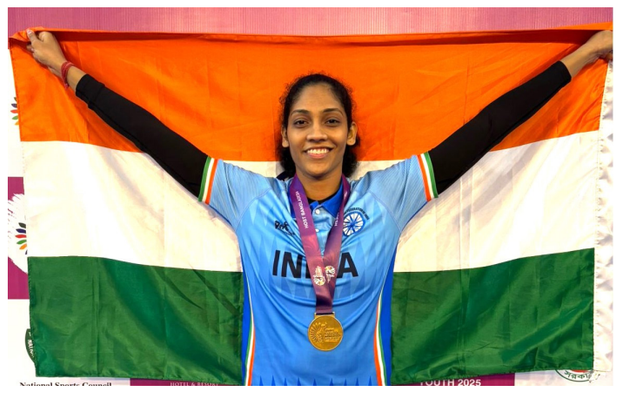

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों को संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने पश्चिम रेलवे मुख्यालय, मुंबई में अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों श्री विकाससिंह, प्वाइंट्समैन और श्री कमलेश कुमार एम., लोको पायलट को उत्कृष्ट कार्य एवं सुरक्षित ट्रेन संचालन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। इन दोनों कर्मचारियों को अक्टूबर 2025 के दौरान अपनी सतर्कता, त्वरित निर्णय क्षमता और कर्तव्यनिष्ठा से संभावित दुर्घटनाओं को टालने के लिए सम्मानित किया गया। 03 अक्टूबर 2025 को सामाखियाली स्टेशन पर ड्यूटी के दौरान प्वाइंट्समैन श्री विकाससिंह ने एक लॉन्ग हॉल ट्रेन के वैगन (CNCR 5452113254) के एक्सल पर दो बोल्ट गायब पाए। उन्होंने तुरंत लाल सिग्नल देकर ट्रेन को रोका। जांच में बोल्ट गायब होने की पुष्टि हुई, जिसके बाद CCR के निर्देशानुसार वैगन को C&W स्टाफ द्वारा अटेंड करने हेतु ट्रेन

को लाइन नंबर 03 पर लाया गया और सुरक्षित तरीके से आगे की कार्यवाही की गई। उनकी सजगता के कारण एक संभावित गंभीर तकनीकी त्रुटि समय रहते टल गई। 04 अक्टूबर 2025 को ट्रेन संख्या 69243 असारवा–उदयपुर को चलाते समय लोको पायलट श्री कमलेश कुमार एम. ने हिम्मतनगर से आगे किलोमीटर 321/12–321/11 पर तीन अज्ञात व्यक्तियों को रेलवे ट्रैक पर वस्तुएँ रखते देखा। उन्होंने तुरंत इमरजेंसी ब्रेक लगाया और ट्रेन को अवरोध से लगभग 15 मीटर पहले सुरक्षित रूप से रोक लिया।

जांच में पाया गया कि ओएचई कैंटिलीवर असेंबली (रजिस्टर आर्म) का एक हिस्सा पटरियों पर गिरा हुआ था। उन्होंने इसकी सूचना तुरंत संबंधित अधिकारियों को दी और लोहे की रॉड को सुरक्षित कर आगे की सभी प्रक्रियाएँ नियमों के अनुसार पूरी कीं। उनकी तत्परता और त्वरित निर्णय क्षमता ने एक बड़ी दुर्घटना को टालने में अहम भूमिका निभाई।

अहमदाबाद मंडल को अपने ऐसे कर्मठ और जिम्मेदार कर्मचारियों पर गर्व है, जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी धैर्य, सतर्कता और पेशेवर दक्षता का परिचय देते हैं। यह सम्मान न केवल उनकी कर्तव्यपरायणता की सराहना है, बल्कि पश्चिम रेलवे की उस कार्य-संस्कृति का प्रतीक भी है, जहाँ संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में 6वीं डीआरएम चैंपियनशिप का शुभारंभ

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में अहमदाबाद मंडल स्पोर्ट्स एसोसिएशन (ADSA) द्वारा आयोजित 6वीं डीआरएम चैंपियनशिप का शुभारंभ 25 नवंबर 2025 को साबरमती स्थित स्पोर्ट्स ग्राउंड में किया गया। इस आयोजन की शुरुआत एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश द्वारा की गई। वर्ष 2025-26 की इस चैंपियनशिप में 10 खेल और कुल 38 इवेंट शामिल हैं। अहमदाबाद मंडल के 16 विभागों के लगभग 1100–1200 कर्मचारी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं, जो इसे पश्चिम रेलवे की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिताओं में से एक बनाता है। प्रतिस्पर्धा में क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज और एथलेटिक्स सहित कई लोकप्रिय खेल शामिल हैं। कुल 16 टीमें विभिन्न विभागों, कारखाने, साबरमती स्टोर तथा गांधीधाम एरिया मैनेजर टीम से भाग ले रही हैं। डीआरएम चैंपियनशिप का उद्देश्य खेल भावना को प्रोत्साहित करना, कर्मचारियों में टीमवर्क बढ़ाना तथा शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देना है। यह आयोजन कर्मचारियों को खेलों के माध्यम से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

राजकोट में आगामी 8 से 11 जनवरी, 2026 के दौरान आयोजित होगा वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्जीबिशन (वीजीआरई) – कच्छ तथा सौराष्ट्र

वीजीआरई 2026 कच्छ तथा सौराष्ट्र क्षेत्र में एमएसएमई, औद्योगिक तथा क्षेत्रीय विकास को वेग देने के लिए सज्ज है

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात सरकार ने कच्छ तथा सौराष्ट्र अंचल के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) के द्वितीय संस्करण की घोषणा की है, जो आगामी 8 से 9 जनवरी, 2026 के दौरान राजकोट में आयोजित होगा। इस कॉन्फ्रेंस के साथ ही 8 से 9 जनवरी, 2026 के दौरान उसी स्थल पर वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्जीबिशन (वीजीआरई) भी आयोजित होगा; जो समग्र कच्छ तथा सौराष्ट्र क्षेत्र के उद्योगों, एमएसएमई, सरकारी संस्थाओं एवं उद्यमियों के लिए एक उच्च प्लेटफॉर्म प्रदान करेगा। द्वितीय वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस सिरामिक्स, इंजीनियरिंग, बंदरगाह एवं लॉजिस्टिक्स, मत्स्योद्योग, पेट्रोरसायन, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, खनिज सहित प्रमुख विकास क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करेगी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य रणनीतिक भागीदारी, पॉलिसी सपोर्ट तथा निवेशकों के सहयोग द्वारा गुजरात के पश्चिमी पट्टे में समाविष्ट विकास तथा टिकाऊपन को सुनिश्चित करने के साथ औद्योगिक विकास को वेग देना है।

उल्लेखनीय है कि उत्तर गुजरात में आयोजित प्रथम कॉन्फ्रेंस को असाधारण सफलता मिली थी; जिसमें 18000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र को समाविष्ट किया गया था, छह थीमेटिक पैवेलियन बनाए गए थे, 170 से अधिक एमएसएमी सहित 410 से अधिक एग्जीबिटर्स ने हिस्सा लिया था और इस कॉन्फ्रेंस में 80000 से अधिक मुलाकाती आए थे। आगामी समय में आयोजित होने वाली वीजीआरसी का उद्देश्य अधिक बड़ा एवं अधिक प्रभावशाली कार्यक्रम आयोजित करना है। कच्छ तथा सौराष्ट्र क्षेत्र में आयोजित होने वाली कॉन्फ्रेंस में 6 अत्याधुनिक डोम के साथ 20000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र को समाविष्ट किया जाएगा; जिसमें क्षेत्रीय प्रदर्शनी, नवीनीकरण प्लेटफॉर्म तथा बिजनेस नेटवर्किंग अवसरों का समावेश होगा। इस एग्जीबिशन में एग्रो, फूड प्रोसेसिंग एवं फिशरीज, रिन्यूएबल एनर्जी, इंजीनियरिंग, बंदरगाह एवं लॉजिस्टिक्स, हथकरघा एवं हस्तकला, रसायन एवं पेट्रोरसायन, बैंक एवं वित्तीय संस्थाएँ तथा शिक्षा संस्थाएँ सहित उच्च विकास क्षेत्रों की अग्रणी कंपनियाँ और संस्थाएँ भाग लेंगी। इसके अतिरिक्त; ऊर्जा एवं पेट्रोरसायन विभाग, कृषि विभाग, गुजरात ऊर्जा विकास एजेंसी, गुजरात खनिज विकास निगम, वन विभाग, गुजरात मैरीटाइम बोर्ड, शिक्षा विभाग, गुजरात प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पर्यटन विभाग तथा स्टार्टअप इनक्यूबेटर्स जैसे अनेक प्रमुख सरकारी विभाग और एजेंसियाँ भी इस एग्जीबिशन में भाग लेंगे।

क्राफ्ट विलेज तथा बड़ी संख्या में एमएसएमई की भागीदारी से इस क्षेत्र की समृद्ध कौशल परंपरा तथा उद्यमिता उजागर होंगे। वीजीआरई 2026 का मुख्य आकर्षण वेंडर डेवलपमेंट प्रोग्राम, रिवर्स बायर-सेलर मीट तथा उद्यमी मेला होंगे; जिसका उद्देश्य मार्केट में नए अवसर सृजित करना तथा स्थानीय एमएसएमई, कारीगरों व हथकरघा एवं हस्तकला व्यवसायों को वैश्विक खरीदारों के साथ जोड़ने में सहायता करना है। मुलाकातियों के अनुभव को समृद्ध बनाने एवं भागीदारी बढ़ाने के लिए दैनिक लकी ड्रॉ भी आयोजित किया जाएगा।

अपेक्षा है कि कच्छ तथा सौराष्ट्र के शीर्षस्थ उद्योगपति, उद्यमी, कृषि-व्यवसाय विशेषज्ञ, एमएसएमई, शैक्षणिक संस्थाएँ, कारीगर तथा महिला उद्यमी इस प्रदर्शनी में सहभागी होंगे। उनकी उपस्थिति से वीजीआरई सहयोग, नवीनता तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली प्लेटफॉर्म बनेगा। वीजीआरई राज्य में समावेशी विकास, निवेश को प्रोत्साहन देने, एमएसएमई को मजबूत बनाने और हर क्षेत्र में श्रेष्ठता को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

सुरेन्द्रनगर-चमारज सेक्शन में ब्लॉक के चलते रेल यातायात होगा प्रभावित

(जीएनएस)। राजकोट मंडल के सुरेन्द्रनगर-चमारज सेक्शन में नया रोड ओवर ब्रिज (आरओबी-48) बनाने के लिए ब्लॉक लिया जाएगा। इस ब्लॉक के चलते 29 नवम्बर से लेकर 01 दिसम्बर, 2025 तक रेल यातायात प्रभावित होगा। प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

29 नवम्बर, 2025 को प्रभावित होने वाली ट्रेनें:

- ट्रेन नं 11466 जबलपुर-वेरावल एक्सप्रेस मार्ग में 02.00 घंटा रेगुलेट की जाएगी।
- ट्रेन नं 16337 ओखा-एर्णाकुलम एक्सप्रेस मार्ग में 30 मिनट रेगुलेट की जाएगी।
- ट्रेन नं 19120 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस मार्ग में 30 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

30 नवम्बर, 2025 को प्रभावित होने वाली ट्रेनें:

- ट्रेन नं 19120 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस वेरावल से अपने निर्धारित समय 7.30 बजे की जगह 2 घंटा विलंब से यानि 09.30 बजे प्रस्थान करेगी।
- ट्रेन नं 19119 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल एक्सप्रेस गांधीनगर कैपिटल से अपने निर्धारित समय 10.25 बजे की जगह 2 घंटा विलंब से यानि 12.25 बजे प्रस्थान करेगी।

1 दिसम्बर, 2025 को प्रभावित होने वाली ट्रेनें:

- ट्रेन नं 11464 जबलपुर-वेरावल एक्सप्रेस मार्ग में 03.00 घंटा रेगुलेट की जाएगी।
- ट्रेन नं 19119 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल एक्सप्रेस गांधीनगर कैपिटल से अपने निर्धारित समय 10.25 बजे की जगह 1 घंटा विलंब से यानि 11.25 बजे प्रस्थान करेगी।
- ट्रेन नं 16337 ओखा-एर्णाकुलम एक्सप्रेस मार्ग में 55 मिनट रेगुलेट की जाएगी।
- ट्रेन नं 19120 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस मार्ग में 45 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

रेल यात्रियों से निवेदन है कि वे उपरोक्त फेरबदल को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें और ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेटस की जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें ताकि किसी प्रकार कि असुविधा ना हो।

स्वदेशी ऊर्जा नवाचार को नई रफ्तार, हरदीप सिंह पुरी ने एचपीसीएल के हरित अनुसंधान केंद्र में देखा भविष्य का भारत

(जीएनएस)। मुंबई और बेंगलुरु के बीच फैला भारतीय ऊर्जा क्षेत्र इस समय जिस बड़े बदलाव की ओर बढ़ रहा है, उसे बेंगलुरु स्थित हिन्दुस्तान पेट्रोलियम हरित अनुसंधान एवं विकास केंद्र की प्रयोगशालाओं में साफ-साफ महसूस किया जा सकता है। जब केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी यहां पहुंचे तो यह केवल एक औपचारिक दौरा नहीं था; यह ऊर्जा आत्मनिर्भर भारत की उस यात्रा का वास्तविक दर्शन था, जिसमें विज्ञान, नवाचार और स्वदेशी तकनीक भविष्य की दिशा तय कर रही है। एचपीसीएल के शीर्ष नेतृत्व ने मंत्री का स्वागत किया और उन्हें उन प्रयोगशालाओं से रूबरू कराया जहाँ 150 से अधिक वैज्ञानिक दिन-रात काम कर रहे हैं, जिनमें 37% महिलाएँ हैं—जो ऊर्जा अनुसंधान के क्षेत्र में महिला नेतृत्व के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। मंत्री ने इस योगदान की खुले शब्दों में सराहना की और इसे भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता की दिशा में महत्वपूर्ण

मील का पत्थर बताया।N दौरे का सबसे बड़ा आकर्षण वह क्षण था जब हरदीप सिंह पुरी ने हाइड्रोथर्मल लिक्विफैक्शन पायलट प्लांट का उद्घाटन किया। यह प्लांट सुनने में भले वैज्ञानिक शब्दों का संग्रह लगे, लेकिन असल में यह समुद्री शैवाल से बायो-क्रूड बनाने की क्रांतिकारी क्षमता रखता है। यानी समुद्र में उगने वाली साधारण-सी शैवाल ऊर्जा का भविष्य बन सकती है—और भारत इस तकनीक को अपनाने वाले शुरुआती देशों में से एक बनकर उभर रहा है। मंत्री ने इसे जैव-ऊर्जा क्षेत्र में "गेम चेंजर" बताते हुए कहा कि यह तकनीक भारत की स्वदेशी शोध क्षमता को मजबूत करने वाली उपलब्धि है। इसके बाद केंद्र की इंजन प्रयोगशाला में वह प्रदर्शन किया गया जहां दोपहिया वाहनों के लिए फ्लेक्स-फ्यूल रेट्रोफिट किट दिखाई गई। भारत भविष्य में अधिक इथेनॉल मिश्रण वाले ईंधन की दिशा में बढ़ रहा है, और यह तकनीक उसी दिशा में बढ़ाया गया दृढ़ कदम है। मंत्री ने इसे शहरी परिवहन और ग्रामीण आजीविका दोनों के लिए लाभकारी बताया। यात्रा आगे बढ़ी तो मंत्री उन अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में पहुंचे, जहां भविष्य की बैटरियां जन्म ले रही हैं—लिथियम-आयन, सोडियम-आयन और वैनेडियम रेडॉक्स फ्लो बैटरियां। इन्हीं दीवारों के भीतर 1 kW लिथियम-आयन बैटरी पैक सफलतापूर्वक विकसित किया गया है, जो आने वाले समय में भारत की इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को नई मजबूती देगा।